ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-8 No. 3 August 2020

"बीकानेर रियासत की सैन्य व्यवस्था : एक ऐतिहासिक मूल्यांकन"

मदन पाल भोबिया
शोधार्थी, इतिहास
टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर

डॉ. अनिल सिहाग
सहायक आचार्य, इतिहास विभाग
टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर

परिचय (Introduction) :–

बीकानेर राज्य का ऐतिहासिक वृत्तान्त :–

प्राचीन काल में उत्खनन से जो सामग्री मिली है एवं पुरात्तत्ववेताओं ने जो कार्य किये है, उससे यह स्पष्ट होता है कि प्रागैतिहासिक काल से ही कुरू प्रदेश आबाद होने लग गया था। वेदों में कुरू की एक आख्यायिका का वर्णन है। उसके अनुसार कुरू को अपना मूल स्थान त्याग कर दक्षिण की ओर जाना पड़ा था। जब अपने मूल स्थान को छोड़कर नवीन प्रदेशों में पहुंचे तो उन्होंने नवीन राज्य का निर्वाचन कर लिया। वैदिक आख्यायिका से प्रतीत होता है कि कुरू गण बीकानेर के प्रदेशों में निवास करने लगे और कुरूओं के कारण ही यह प्रदेश 'जांगल देश' कहलाने लगा।

बीकानेर राज्य का प्राचीन नाम 'जांगल देश' था। महाभारत में जांगल का नाम कुरू और मद्र देशों के साथ जुड़ा मिलता है। महाभारत में अनेक ऐसे देशों के नाम पाये जाते हैं जो परस्पर मिले हुए हैं जैसे 'कुरू पंचाला', 'भाद्रेय जांगला', 'कुरू जांगला' इत्यादि। इनका आशय है कि कुरू देश से मिला हुआ 'पंचाला देश' मद्र देश से मिला हुआ 'जांगल देश' कुरू से मिला हुआ 'जांगल देश' इत्यादि। बीकानेर के शासक जांगल देश के राजा होने के कारण 'जंगलधर बादशाह' कहलाये।

राठौड़ों के एकाधिकार करने से पूर्व बीकानेर का दक्षिण भाग जो जोधपुर राज्य के उत्तर में था 'जागलू' नाम से प्रसिद्ध था। वह सांखले परमारों के अधीन था, जो उनका मुख्य नगर जांगलू कहलाता था तथा अब तक वह नगर उसी नाम से प्रसिद्ध था। मध्यकाल में उस देश की राजधानी अहिच्छत्रपुर थी जिसको इस समय नागौर कहते हैं और अब राजस्थान राज्य का एक जिला है। जांगल देश के उत्तरी भाग पर राठौड़ों का अधिकार होने के बाद उनकी राजधानी बीकानेर में स्थापित हुई।

बीकानेर राज्य की स्थापना :–

15वीं शताब्दी के आरम्भ में बीकानेर के रेगिस्तानी क्षेत्र में स्थापित रहने वाले राठौड़ वीर थे। उन्हें विजय के अधिकार में अटूट विश्वास था। बीकानेर के राठौड़ राज्य की स्थापना करने वाला राव बीका था जो मारवाड़ के शासक राव जोधा का सबसे बड़ा पुत्र था।

मारवाड़ का शासक राव जोधा अपने राजघराने में पारस्परिक विद्रोह की भावना को रोकने के लिए नई भूमि की खोज में चिन्तित था। राव जोधा को अपनी हाड़ी रानी जसमादे से अधिक स्नेह था और उसके पुत्र नीबा की अल्पकाल में मृत्यु हो जाने के कारण, उसके दूसरे छोटे पुत्र सातल को गद्दी देने के लिए सांखली रानी नौरंगदे के पुत्र बीका को किसी अन्य क्षेत्र में स्थापित करके वह मारवाड़ राज्य को उत्तराधिकार की समस्याओं से बचाना चाहता था। राव जोधा ने अपनी रानी जसमादे के छल–कपट में आकर अपने बड़े बेटे बीका से जांगल देश की तरफ निकल जाने की इच्छा प्रकट की। अतः अपने बड़े पुत्र बीका को बुलाकर कहा कि, "हे पुत्र! पिता के राज्य

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-8 No. 3 August 2020

को पुत्र लेवे, इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है, परन्तु जो नया राज्य स्थापित करे, वही पुत्रों में श्रेष्ठ गिना जाता है। अतः तुम साहसी एवं वीर हो, इसी कारण मैंने इस कार्य के लिए तुम्हे उपयुक्त समझा। पृथ्वी पर कठिनता से प्राप्त होने वाला जांगल नामक देश है और तुम इस क्षेत्र पर विजय प्राप्त कर सकते हो।'' ऐसी स्थिति में जांगल के नापा सांखला द्वारा राठौड़ो को जांगल देश में आक्रमण का निमंत्रण कर उनकी सत्ता के विस्तार के लिए कार्य बन गया था। क्योंकि इससे पूर्व राठौड़ जांगल देश पर आक्रमण करके स्थायी रूप से सफलता प्राप्त नहीं कर सके थे। नापा सांखला भी अपने क्षेत्र पर बलूचियों व भाटियों के निरन्तर आक्रमणों के कारण अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए राठौड़ों के संरक्षण में सुरक्षित रहने की योजना बना रहा था।

राव जोधा ने बीका को अपने चाचा कांधल एवं नापा सांखला के साथ जांगल प्रदेश में जाकर नया राज्य स्थापित करने के लिए आज्ञा प्रदान की। अतः बीका ने अपने चाचा कांधल, रूपा, मांडण, नाथू, भाई जोगा, बीदा, पड़िहार बेला, महन्ता लाला, लाखण, बच्छावत, महन्ता बरसिंह इत्यादि राठौड़ों के साथ विक्रमी सम्वत् 1552 (इ. सं. 1495 ता. 30 सितम्बर) को मारवाड़ से प्रस्थान किया बीका के साथ 100 सवार तथा 500 पैदल सैनिक थे।

बीका के जाने से पूर्व उनके छोटे भाई बीदा ने मोहिलों पर आक्रमण करके उनके क्षेत्र को जीत लिया था। इससे बीका भी उत्साहित होकर दिग्विजय के लिए निकल पडे। बीका ने आस पास के क्षेत्रों को जीतते हुए पूगल के भाटियों से भी युद्ध किया और उनकों अपनी जीत का लौहा मनवाया। अंततः रातीघाटी नामक स्थान पर विक्रमी सम्वत् 1542 (सन् 1485) में गढ़ की नींव रखी गई और वि.सं. 1545 वैशाख सुदि 2 (12 अप्रैल 1488) को गढ़ के आस–पास बीका ने अपने नाम पर बीकानेर नगर स्थापित किया।

बीकानेर की स्थापना पर यह दोहा प्रसिद्ध है –

पनरै से पैंतावले, सुद वैसाख सुमेर।
थावर बीज थरपियो, बीके बीकानेर।।

सेना का सामन्ती स्वरूप :–

बीकानेर राज्य में राव बीका ने एक केन्द्रीय सेना का गठन किया, लेकिन राव बीका द्वारा गठित यह केन्द्रीय सेना स्थायित्व प्राप्त नहीं कर सकी। बल्कि इस काल से ही सामन्तवादी सैनिक प्रणाली का सूत्रपात हो गया। इस सामन्तवादी सेना प्रणाली के अनुसार समस्त राज्य की सेना दो भागों में विभाजित थी। राजकीय सेना के अलावा प्रत्येक सामन्त या जागीरदार को भी अपनी सेना जागीर की हैसियत के अनुसार घुड़सवार एवं पैदल सैनिक रखने पड़ते थे एवं युद्ध के समय राजा की सेवा में उपस्थित होना पड़ता था।

18वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक शासक सैनिक दृष्टि से सामन्तों पर ही निर्भर थे, क्योंकि शासक की स्वयं की सेना नाममात्र की होती थी। वस्तुतः बीकानेर राठौड़ों का सैन्य संगठन दो रूपों में था। प्रथमतः बीकानेर के जागीरदारों की वह सेना जो जागीर के उवज में जागीरदार शासक की सेवा में युद्ध के समय भेजते थे। यह शासक की सेना कहलाती थी किन्तु इसका समस्त खर्चा जागीरदार अपनी जागीर से वहन करते थे।

द्वितीय, जागीरदार की स्वयं की सेना होती थी। जिसे आवश्यकता पड़ने पर शासक की सेवा में भेज दिया करते थे। राजकीय सेना में सामन्तो की सेना का पृथक अस्तित्व होता था। युद्ध स्थल पर जागीरदारों की सेना का नेतृत्व प्रमुख जागीरदार ही किया करते थे। लेकिन केन्द्रीय सेना व सामन्तों की सेना में सहयोग एवं सामंजस्य बनाए रखने के लिए जागीरदारों को बख्शी के निर्देशानुसार ही कार्य करना पड़ता था।

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-8 No. 3 August 2020

बीकानेर राज्य की सेना पर मुगल प्रभाव :–

मुगलों के साथ सम्पर्क स्थापित हो जाने के बाद राठौड़ शासक ने सैन्य व्यवस्था में परिवर्तन किया। बीकानेर में महाराजा रायसिंह ने भी राज्य में अनेक सैन्य विभाग को गठित किया। पुरानी सैन्य व्यवस्था में परिवर्तन करके उसे मुगल सैन्य व्यवस्था द्वारा संगठित किया। साम्राज्य में सैनिक विभाग के महत्त्व को समझते हुए साम्राज्य के योग्यतम खान को वजीर नियुक्त किया।

बीकानेर में 'शतुरखाना' 'पीपलखाना' 'सिलहपोसखाना' व तोपखाना का मुख्य विभागीय प्रशासनिक अधिकारी फौजदार कहलाता था। जो अपने विभाग से संबंधित खरीद, निरीक्षण व वस्तुओं के प्रबंध की व्यवस्था रखते थे। मुगलों के शासनकाल में इन विभागों का महत्त्व और भी बढ़ गया था क्योंकि उस समय दीवान–ए–अर्ज के अतिरिक्त कोई भी दीवान की प्रतिष्ठा न रह गई थी। इस काल में सैनिक विभाग स्वतंत्र रूप से स्थापित हो चुका था। जैसे रावत–ए–अर्ज, अर्ज–ए–ममालिक व दीवान–ए–अर्ज। इस विभाग के प्रमुख को अर्ज–ए–मिमालिक या रावत–ए–अर्ज कहा जाता था। बीकानेर राज्य में ऊँट सवारों के दस्ते सेना के महत्त्वपूर्ण अंग थे, जो रेगिस्तानी वातावरण में बहुत ही प्रभावशाली सिद्ध होते थे। अतः शुतुरखाने के फौजदार का अपना महत्त्व होता था। इनकी सहायता के लिए हुवलदार व दारोगा होते थे, जो मुख्यतः हाथियों व ऊँटों की व्यवस्था का दायित्व संभालते थे। तोपखाने का फौजदार नई तोपों के निर्माण तथा बारूद का प्रबन्ध करता था।

बीकानेर राज्य की सेना की ये सम्पूर्ण व्यवस्था मुगल साम्राज्य के प्रभाव में आने के कारण ही बनी थी। मुगलों का बीकानेर की सैन्य व्यवस्था पर गहरा प्रभाव पड़ा है ये प्रभाव बीकानेर राज्य की सैन्य व्यवस्था में साफ झलकता है। मुगलों के सम्पर्क में आकर बीकानेर शासकों ने अपनी पैदल सेना, अश्वरोही सेना, गज सेना, ऊँट सेना व तोपखाने में जोरदार सुधार किये।

ब्रिटीश सम्पर्क का सैन्य व्यवस्था पर प्रभाव :–

1818 ई. की आंग्ल–बीकानेर सन्धि की शर्तों के अनुसार यह निश्चित हुआ कि बीकानेर राज्य की रक्षा का उत्तरदायित्व ईस्ट इण्डिया कम्पनी अपने ऊपर लेती है। कम्पनी राज्य की बाहरी आक्रमणों व आन्तरिक उपद्रवों से रक्षा करेगी। लेकिन साथ ही यदि किसी अन्य राज्य के और महाराजा के बीच किसी कारण विवाद उत्पन्न होगा तो उसका निर्णय कम्पनी करेगी। यदि किसी पक्ष को कम्पनी का निर्णय स्वीकार नहीं हुआ तो सैन्य खर्च लेकर कम्पनी बीकानेर राज्य की सैनिक सहायता करेगी। युद्ध के समय महाराजा को अंग्रेज सेनापति की सलाह से कार्य करना पड़ेगा। आवश्यकता पड़ने पर महाराजा भी कम्पनी को सैनिक सहायता देंगे।

इस प्रकार अंग्रेजी सम्पर्क के प्रथम चरण से ही अंग्रेजो ने बीकानेर राज्य की सुरक्षा का जिम्मा लेकर यहां की स्थानीय सेना को आगे बढ़ने से एवं सुसंगठित होने से रोकने का प्रयास किया। वास्तव में अंग्रेजो द्वारा किया जाने वाला यह प्रस्ताव भाड़े के सैनिकों की तरह ही था।

1818 ई. की सन्धि में बीकानेर राज्य की सैन्य व्यवस्था को काफी हद तक प्रभावित किया। सन्धि के द्वारा अंग्रेजों ने महाराजा सूरतसिंह को बाह्य आक्रमणों तथा सामन्तों के विद्रोहों को रोकने का वचन दिया।

इस प्रकार 1818 ई. की सन्धि शर्तों का सैन्य दृष्टिकोण से विश्लेषण करें तो यह बात स्पष्ट हो जाती है कि इस सन्धि से बीकानेर की सेना पर हानिकारक व लाभदायक दोनों प्रकार का प्रभाव पड़ा, जहाँ अंग्रेजों ने बीकानेर राज्य की रक्षा का भार अपने ऊपर लेकर यहाँ की सैन्य शक्ति की तरफ ध्यान देने का मौका नहीं दिया, वहीं दूसरी तरफ अंग्रेजी सेना को बीकानेर की सीमा में रखकर बीकानेर के सैनिकों को नवीन जानकारी,

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-8 No. 3 August 2020

नवीन युद्ध पद्धति एवं नये अस्त्रों–शस्त्रों को समझने का मौका दिया। वास्तव में अंग्रेजों से सम्पर्क के बाद ही बीकानेर सेना एक नवीन दौर में प्रवेश करती है। अंग्रेजी सेना के सम्पर्क के कारण ही बीकानेर की सेना का आधुनिकीकरण हुआ।

प्रस्तावित शोध कार्य का महत्व :–

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन द्वारा बीकानेर रियासत की सैन्य व्यवस्था पर प्रकाश डाला जायेगा।
2. बीकानेर रियासत की सैन्य व्यवस्था के सामन्ती स्वरूप का अध्ययन प्रस्तावित शोध में किया जायेगा जिससे हमें उस काल में सामन्तवादी व्यवस्था के महत्त्व की जानकारी प्राप्त हो सकेगी।
3. प्रस्तुत शोध अध्ययन से बीकानेर राज्य की सेना पर मुगल प्रभाव की जानकारी प्राप्त हो सकेगी।
4. प्रस्तुत शोध अध्ययन के माध्यम से सैन्य व्यवस्था में हुए सुधार व परिवर्तनों के महत्व का उल्लेख किया जा सकेगा।
5. बीकानेर रियासत की प्रमुख सैन्य गतिविधियों की जानकारी प्रस्तुत शोध अध्ययन से प्राप्त हो सकेगी।
6. ब्रिटिश सम्पर्क का सैन्य व्यवस्था पर पड़े प्रभाव के महत्व पर इस शोध प्रबन्ध में प्रकाश डाला जायेगा।
7. प्रस्तुत शोध अध्ययन के माध्यम से दुर्ग प्रबन्ध के महत्व पर जानकारी प्राप्त होगी।
8. प्रस्तुत शोध के माध्यम से बीकानेर रियासत की तत्कालिक राजनीतिक व्यवस्था की जानकारी प्राप्त हो सकेगी।
9. प्रस्तुत शोध प्रबन्ध से सैन्य व्यवस्था में हुऐ परिवर्तनों के महत्व पर प्रकाश पड़ेगा।

समस्या कथन :–

''बीकानेर रियासत की सैन्य व्यवस्था : एक ऐतिहासिक मूल्यांकन''

शोध कार्य के प्रमुख उद्देश्य :–

1. बीकानेर राज्य की ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि का अध्ययन करना।
2. बीकानेर की सेना के सामन्ती स्वरूप का अध्ययन करना।
3. बीकानेर रियासत की सेना पर पड़े मुगल प्रभाव का अध्ययन करना करना।
4. बीकानेर राज्य में स्थायी सेना के गठन एवं विकास का अध्ययन करना।
5. बीकानेर राज्य में हुई प्रमुख सैनिक गतिविधियों का अध्ययन करना।
6. बीकानेर राज्य की सेना पर ब्रिटिश सम्पर्क का प्रभाव का अध्ययन करना।
7. राज्य की सुरक्षा के लिए दुर्ग एवं दुर्ग प्रशासन का अध्ययन करना।
8. बीकानेर रियासत की सेना ''गंगा रिसला'' का अध्ययन करना।

शोध प्रश्न :–

एतिहासिक अनुसंधानविदों ने एतिहासिक शोधकर्ताओं को एतिहासिक अन्वेषण करते समय परिकल्पना के पीछे न दौड़ने की सलाह दी है फिर भी औपचारिक रूप से शोधकर्ता निम्न शोध प्रश्न प्रस्तुत करता है –

1. बीकानेर राज्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि किस प्रकार की थी ?
2. बीकानेर राज्य की सेना में सामन्तों की क्या भूमिका थी ?
3. मुगलों के सम्पर्क का बीकानेर राज्य की सेना पर क्या प्रभाव पड़ा ?
4. ब्रिटिश सम्पर्क बीकानेर राज्य की सेना के लिए हानिकारक रहा या फायदेमंद रहा ?

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-8 No. 3 August 2020

5. बीकानेर राज्य में स्थायी सेना के गठन एवं विकास में क्या परेशानियाँ आयी ?
6. राज्य की सुरक्षा के लिए दुर्ग एवं दुर्ग प्रशासन का क्या महत्व था ?

शोध प्रविधि :–

शोध के अन्तर्गत बीकानेर राज्य की सैन्य व्यवस्था में सम्बन्धित अध्ययन सामग्री एवं आकड़ों को एकत्रित किया गया। अध्ययन सामग्री एवं आंकडों के संकलन का आधार द्विप्रणाली है। इसके अंतर्गत प्राथमिक स्रोतों से संकलित समंक अनुभव आधारित होते है तथा विभिन्न शोध–पत्रों, शोध प्रबन्धों, पुस्तकों, पत्रिकाओं में प्रकाशित सामग्री से प्राप्त संयक गौण विधि उपागम पर आधारित होते है। शोध कार्य को शोधोन्मुखी एवं उपयोगी बनाने के लिए अध्ययन क्षेत्र में संमकों के संकलन के लिए उक्त दानों ही विधियाँ प्रयुक्त की गयी।

मुख्य निष्कर्ष चर्चा :–

बीकानेर राज्य का प्राचीन नाम 'जांगल देश' था। महाभारत में जांगल का नाम कुरू और मद्र देशों के साथ जुड़ा मिलता है। राठौड़ों के एकाधिकार करने से पूर्व बीकानेर का दक्षिण भाग जो जोधपुर राज्य के उत्तर में था 'जागलू' नाम से प्रसिद्ध था। वह सांखले परमारों के अधीन था, जो उनका मुख्य नगर जांगलू कहलाता था जोधपुर शासक राव जोधा ने उत्तराधिकार की परेषानियों से बचने के लिए अपने बड़े पुत्र बीका को अन्य स्थान पर जाकर नया राज्य स्थापित करने का आदेश दिया पिता की आज्ञा का पालन करने के लिए बीका ने जागलू प्रदेश की ओर कूच किया। बीका ने आस पास के क्षेत्रों को जीतते हुए पूगल के भाटियों से भी युद्ध किया और उनकों अपनी जीत का लौहा मनवाया। अंततः रातीघाटी नामक स्थान पर विक्रमी सम्वत् 1542 (सन् 1485) में गढ़ की नींव रखी गई और वि.सं. 1545 वैषाख सुदि 2 (12 अप्रैल 1488) को गढ़ के आस–पास बीका ने अपने नाम पर बीकानेर नगर स्थापित किया।

बीकानेर राज्य में राव बीका ने एक केन्द्रीय सेना का गठन किया, लेकिन राव बीका द्वारा गठित यह केन्द्रीय सेना स्थायित्व प्राप्त नहीं कर सकी। बल्कि इस काल से ही सामन्तवादी सैनिक प्रणाली का सूत्रपात हो गया। 18वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक शासक सैनिक दृष्टि से सामन्तों पर ही निर्भर थे, क्योंकि शासक की स्वयं की सेना नाममात्र की होती थी। राजकीय सेना में सामन्तो की सेना का पृथक अस्तित्व होता था। युद्ध स्थल पर जागीरदारों की सेना का नेतृत्व प्रमुख जागीरदार ही किसा करते थे। लेकिन केन्द्रीय सेना व सामन्तों की सेना में सहयोग एवं सामंजस्य बनाए रखने के लिए जागीरदारों को बख्शी के निर्देशानुसार ही कार्य करना पड़ता था।

मुगलों के साथ सम्पर्क स्थापित हो जाने के बाद राठौड़ शासक ने सैन्य व्यवस्था में परिवर्तन किया। पुरानी सैन्य व्यवस्था में परिवर्तन करके उसे मुगल सैन्य व्यवस्था द्वारा संगठित किया। साम्राज्य में सैनिक विभाग के महत्त्व को समझते हुए सैनिक विभाग पर विशेष ध्यान दिया गया। मुगलों के सम्पर्क में आने के बाद बीकानेर की सेना व्यवस्था में नये पदों का सृजन किया गया जिससे की सेना के नेतृत्व को मजबूती मिले। सेना में घोड़े, हाथी का अधिक से अधिक उपयोग किया गया। मुगलों ने बीकानेर राज्य को तोपखाने का सही ढंग से प्रयोग करना सिखाया। मुगलों ने बीकानेर के सैन्य विभाग को नई तोपों के निर्माण एवं बारूद का प्रबंधन करना भी सिखाया। बीकानेर राज्य की सेना की ये सम्पूर्ण व्यवस्था मुगल साम्राज्य के प्रभाव में आने के कारण ही बनी थी। मुगलों का बीकानेर की सैन्य व्यवस्था पर गहरा प्रभाव पड़ा है ये प्रभाव बीकानेर राज्य की सैन्य व्यवस्था में साफ झलकता है। मुगलों के सम्पर्क में आकर बीकानेर शासकों ने अपनी पैदल सेना, अश्वरोही सेना, गज सेना, ऊँट सेना व तोपखाने में जोरदार सुधार किये।

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-8 No. 3 August 2020

ईस्ट इण्डिया कम्पनी के भारत में अपने पांव जमाने के बाद बीकानेर रियासत और कम्पनी के बीच एक सन्धि हुई 1818 ई. की आंग्ल–बीकानेर सन्धि कहा जाता है। इस सन्धि की शर्तों के अनुसार यह निश्चित हुआ कि बीकानेर राज्य की रक्षा का उत्तरदायित्व ईस्ट इण्डिया कम्पनी अपने ऊपर लेती है। कम्पनी राज्य की बाहरी आक्रमणों व आन्तरिक उपद्रवों से रक्षा करेगी। इस प्रकार अंग्रेजी सम्पर्क के प्रथम चरण से ही अंग्रेजो ने बीकानेर राज्य की सुरक्षा का जिम्मा लेकर यहाँ की स्थानीय सेना को आगे बढ़ने से एवं सुसंगठित होने से रोकने का प्रयास किया। 1818 ई. की सन्धि में बीकानेर राज्य की सैन्य व्यवस्था को काफी हद तक प्रभावित किया। इस प्रकार 1818 ई. की सन्धि शर्तों का सैन्य दृष्टिकोण से विश्लेषण करें तो यह बात स्पष्ट हो जाती है कि इस सन्धि से बीकानेर की सेना पर हानिकारक व लाभदायक दोनों प्रकार का प्रभाव पड़ा, जहाँ अंग्रजों ने बीकानेर राज्य की रक्षा का भार अपने ऊपर लेकर यहाँ की सैन्य शक्ति की तरफ ध्यान देने का मौका नहीं दिया, वहीं दूसरी तरफ अंग्रेजी सेना को बीकानेर की सीमा में रखकर बीकानेर के सैनिकों को नवीन जानकारी, नवीन युद्ध पद्धति एवं नये अस्त्रों–शस्त्रों को समझने का मौका दिया। वास्तव में अंग्रेजों से सम्पर्क के बाद ही बीकानेर सेना एक नवीन दौर में प्रवेश करती है। अंग्रेजी सेना के सम्पर्क के कारण ही बीकानेर की सेना का आधुनिकीकरण हुआ।

महाराजा जोरावर सिंह ने सिपाहियों की एक छोटी सी वैतनिक सेना का गठन किया। इस सेना की सहायता से बीकानेर में अनेक स्थानों पर व्यापक आतंक को समाप्त किया गया। महाराजा जोरावर सिंह ने इस छोटी सी सेना को ही स्थायी सेना का रूप प्रदान कर दिया। इसी के साथ ही बीकानेर में स्थायी सेना पद्धति का सूत्रपात हुआ। बीकानेर की स्थायी सेना में राठौड़ सैनिकों का प्रधान स्थान एवं बहुमत था। परन्तु राठौड़ों के अतिरिक्त सिंधी सिपाहियों, रोहिला, पूर्बिया आदि लोगों को भी सेना में सम्मिलित किया गया था। आवश्यकतानुसार नागा साधुओं को भी सैनिक अभियान में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया जाता था। इस स्थायी सेना के पाँच भाग होते थे।

1. पैदल सेना 2. अश्व सेना 3. गज सेना 4. ऊँट सेना 5. तोपची सेना

नवीन संगठित सेना की सहायता से बीकानेर के महाराजा जोरावर सिंह ने राज्य के अनेक परगनों में विद्रोह तत्त्वों को समाप्त कर दिया। वेतनिक सेना की इस सफलता से बीकानेर के असन्तुष्ट सामन्त घबराने लगे। इन सामन्तों ने इस नवीन सेना को अपनी स्वेछाचारी प्रवृत्ति के लिए हानिकारक समझ कर इसका विरोध करना आरम्भ कर दिया। इससे महाराजा और सामन्तों के आपसी सम्बन्धों में कुटता की वृद्धि हुई, जो आगे चलकर बीकानेर के लिए घातक सिद्ध हुई। बीकानेर के सामन्तों में निरन्तर असंतोष फैलता गया एवं महाराजा से उनके सम्बंध सौहार्द्रपूर्ण नहीं रहे। बीकानेर के सामन्तों ने महाराजा के सम्मुख शर्त रखी की स्थायी सेना को समाप्त किया जाये।

यद्यपि महाराजा जोरावर सिंह ने एक स्थाई सेना का गठन अवश्य किया था परन्तु सामन्तों के दबाब के कारण वे इस विशाल सेना का रूप नहीं दे पाये व न ही इस सेना को आधुनिक सैन्य पद्धति के अनुसार प्रशिक्षण, अस्त्र–शस्त्र दे पाये। यह स्थाई सेना कभी भी मध्य कालीन राठौड़ सेना की तरह नहीं थी साथ ही इस स्थाई सेना में इतनी शक्ति भी नहीं थी।

राजस्थान के बालुकामय प्रदेश में स्थित बीकानेर का लाल पत्थरों से बना दुर्ग सुन्दर अधिक है और सुदृढ़ कम। लाल प्रस्तर खण्ड़ों को आभा और चमक–दमक तथा निर्माण की उत्कृष्टता के कारण बीकानेर का दुर्ग

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-8 No. 3 August 2020

नवीन सा लगता है। महलों में पत्थर की सुन्दर खुदाई, रमणीय चित्रकला तथा सजावट के कारण यह दुर्ग कला का संग्रह स्थल बना गया है। बीकानेर के पुराने दुर्ग का निर्माण तो बीकानेर के यशस्वी संस्थापक राव बीका ने करवाया था। इसके पश्चात् महाराजा रायसिंह ने बीकानेर के वर्तमान दुर्ग जूनागढ़ का निर्माण करवाया। बीकानेर के पुराने किले पर राव मालदेव ने 1541 ई. में आक्रमण किया था। जिसमें राव जैतसी मारा गया। किले वालों ने तीन दिनों तक बहादुरी से सामना किया पर चौथे दिन सभी लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हो गये। जोधपुर नरेश मानसिंह के समय में भी बीकानेर दुर्ग पर कई आक्रमण हुए, पर दुर्ग नहीं घेरा गया। आखिर में सन्धि हुई। बीकानेर का दुर्ग आज भी अच्छी अवस्था में खड़ा है। सन् 1733 ई. में बख्तसिंह ने बीकानेर पर आक्रमण किया। बख्तसिंह को भी किला जीतने में सफलता नहीं मिली। किले की रक्षक सेना ने बचाव का अतीव उत्कृष्ट प्रबन्ध किया, जिससे जोधपुर की सेना को जीत का उम्मीद नहीं रही और आखिर में सन्धि हुई। इस प्रकार कह सकते हैं कि बीकानेर का किला देखने में सुन्दर है और कला व संस्कृति का बेजोड़ उदाहरण भी है। अगर किले को एक अच्छी किला रक्षक सेना का आश्रय प्राप्त होता है तो यह किला एक अभेद किला है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. अली, अतहर – दी मुगल नोबिलिटी अण्डर औरगजेब, 1966
2. एडमस, ए.डी. – दी वेस्टर्न राजपूताना स्टेटस एण्ड द बीकानेर एजेन्सीज 1900
3. सिंह, करणी – दी रिलेशन्स ऑफ दी हाउस ऑफ बीकानेर विथ दी सन्ट्रल पावर्स दिल्ली 1974
4. कानूनगो, डा.के.आर. – स्टडीज इन राजपूत हिस्ट्री
5. प्रिसेस, एच.टी. – हिस्ट्री ऑफ पॉलिटिकल एण्ड मिलिट्री ट्रांजेक्शन (कलकत्ता 1832)
6. शर्मा, दशरथ – लेक्चर्स आन राजपूत हिस्ट्री दिल्ली।
7. सक्सेना, के एम.एल. – दी मिल्टी सिस्टम ऑफ इण्डिया 1850–1900
8. सक्सेना, आर.के. – दी आर्मी ऑफ राजपूत
9. राजपूताना गजेटियर बीकानेर भाग–3
10. ओझा जी. एच. – बीकानेर राज्य को इतिहास भाग– 1–2 अजमेर (वि.स. 1996–97)
11. ओझा जी. एच. – बीकानेर राज्य का इतिहास भाग–2 अजमेर वि.स.1996 वि.स.1997
12. ओझा, गौरीशंकर हीराचन्द – राजपूतानें का इतिहास अजमेर 1938
13. भार्गव, वी.एस. – बीकानेर राज्य का इतिहास
14. कुंवर कन्हैया जुवेद – बीकानेर राज्य का इतिहास, पृ.सं. 177
15. शर्मा गौतम – भारतीय सेना और युद्ध कला

Copyright @ 2020 Authors